ताल वाद्य संगीत
तबला / पखावज

तालेन राजति गीत ताल वादित्रं संभवः।
गरीयस्तेन वादित्तं तुच्चर्तुविद्याभिष्यते।।

स्वर गति की शोभा ताल से होती है और ताल वाद्य यंत्रों से ही संभव है अतः गीत, वाद्य, नृत्य की सिद्धि हेतु ताल वाद्ययंत्रों का महत्व है।

अध्याय 1

परिभाषाएँ

कायदा

तबला या पखावज पर बजने वाले वर्ण–समूह तालबद्ध होकर अभ्यास में आने लगे और उन्हें शास्त्रीय रीति से तबला या पखावज पर बजाया जा सके तथा ऊँगलियाँ सधी हुई और तैयार पड़े, बोल स्पष्ट निकले तो उसे कायदा कहते हैं। अर्थात जब कुछ ऐसे बोलो को, जिनका ताल के विभागों के अनुसार खाली–भरी दिखाते हुए प्रस्तार भी किया जा सके अर्थात बजाया जा सके उसे कायदा कहते हैं। कायदे के बोल बजाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि जो बोल काम में लिये जा रहे हैं वे ऐसे हो के उनकी उलट पलट कर ख़ूब विस्तार किया जा सके।

मुखड़ा या मोहरा

किसी टुकड़े को सम से खाली या खाली से सम तक बजाने को ''मुखड़ा'' कहते हैं। ठेके के बीच में सम पर आकर मिलने के लिये जो बोल बजाये जाते हैं उन्हें ''मुखड़ा'' कहते हैं। ये प्रायः एक आवृत्ति से कम के होते हैं।

तबला–वादन में ठेका प्रारम्भ करने से पूर्व जिस रचना को बजाकर सम लाया जाये, उसे 'मोहरा' कहते हैं। यदि इन्हीं बोलों को ठेका प्रारम्भ करने के बाद बीच से बजाकर सम पकड़ेंगे तो अब यही रचना 'मुखड़ा' कहलाएगी। इस प्रकार मोहरा और मुखड़ा एक ही चीज़ हैं, जो स्थान–भेद से दो नाम के हो जाते हैं। उदाहरण के लिये यदि 'धिरधिर किटतक, धातीर, किटतक। तक्क्ड़ान् धातक् क्ड़ान्धा तक्क्ड़ान्' को बिल्कुल प्रारम्भ में बजाकर ठेका बजाना शुरू करेंगे तो इसका नाम 'मोहरा' होगा। किन्तु जब तीन ताल के ठेके की आठ मात्राऐं बजाकर अगली आठ मात्रा में इन बोलों को बजा देंगे तो अब यही रचना 'मोहरा' न कहलाकर 'मुखड़ा' कहलाएगी।

तिहाई

जब किसी टुकड़े को तीन बार बजाकर उसकी समाप्ति हो तो उसे ''तिहाई'' कहते हैं। कई लोग इसे 'मोहरा' भी कहते हैं।

परन

ताल की किसी भी मात्रा से प्रारम्भ होकर जो बोल सम पर समाप्त होता है उसको अथवा ग्रह से सम तक के बाज को 'परन' कहते हैं। 'परन' यह पखावज से संबंधित होता है। अतः इसमें खुले और जोरदार बोलों के आधार पर तबले के वर्णों से निर्मित रचना बनायी जाती है। परन कम से कम दो या तीन आवृत्ति की होती है और तिये सहित होती है।

पेशकार

तबला या पखावज पर बजने वाले सुन्दर–सुन्दर बोलों को विशेष प्रकार से बजाकर श्रोताओं के सामने पेश

करने को ''पेशकार'' कहते हैं। पेशकार के बोलों की विशेषता यह होती है के वो ताल और लय के लहरे पर हिलते हुए एवं आड़दार धक्का देते हुए चलते हैं।

लय और लयकारी

दो क्रियाओं या ताल में दो मात्राओं के बीच रहने वाली विश्रान्ति या ठहराव या पहली क्रिया का विस्तार ''लय'' कहलाता है। यह विश्रान्ति कम या अधिक होने पर लय की गति भी धीमी या तेज हो जाती है। लय मुख्य रूप से तीन प्रकार की मानी जाती है।

(1) विलंबित लय (2) मध्य लय (3) द्रुत लय

विलंबित लय

मध्य लय की ठीक दुगुनी विश्रान्तिवाली लय विलंबित कहलाती है। उदाहरण के लिए यदि मध्यलय में दो क्रियाओं का काल 1 गिनती का है तो विलंबित लय में यह 1–2 का हो जाएगा।

मध्य लय

मध्य लय में विलंबित लय की ठीक आधी विश्रान्ति रहती है।

द्रुत लय

इस लय में मध्य लय की भी ठीक आधी विश्रान्ति रह जाती है। इस प्रकार मध्य लय की ठीक आधी लय विलंबित और मध्य की ठीक दुगुनी लय द्रुत होती है। परन्तु आजकल किसी भी धीमी लय को विलंबित और प्रत्येक लय को द्रुत कह दिया जाता है। इस प्रकार लयों के नाम तो प्राचीन हैं, परन्तु अब उनमें पारस्परिक संबंध नहीं रहा।

यही नहीं, बल्कि आजकल लय की धारण और प्रयोग–विधि, दोनों बदल गए हैं। आजकल जब हमसे किसी ताल की दुगुन करने को कहा जाता है तो हम दो क्रियाओं के बीच में जो विश्रान्ति है, उसे आधा कर देते हैं और ताल की एक आवृत्ति में ठेके को दो बार बजा देते हैं। इसे और अधिक स्पष्ट इस प्रकार समझा जा सकते हैं कि जब हमसे पूछा जाता है कि एक मील लम्बी सड़क का दुगुना कितना ?या एक रूपये के दुगुने कितने रूपये ? तो हम झट उन्हें दूना करके बता देते हैं। परन्तु जब किसी ताल की दुगुन या चौगुन पूछी जाती है तो एक आवृत्ति में ही पूरे ठेके को दो बार या चार बार बजा दते हैं या बोल देते हैं। अब देखा जाए तो यहाँ विश्रान्ति सचमुच दुगुनी या चौगुनी न होकर आधी या चौथाई रह जाती हे। इसीलिये हमने ऊपर कहा है कि आजकल लय की धारण और प्रयोग–विधि दोनों बदल गए हैं।

अतिविलंबित लय

जब लय बहुत कम कर दी जाती है, तो ''अतिविलंबित लय'' कहलाती है।

दुगुन, तिगुन और चौगुन आदि

जब किसी ताल के बोल एक आवृत्ति के काल में ही दो बार बजा दिये जाएँ तो वह दुगुन, तीन बार बजा देने पर तिगुन और चार बार बजा देने पर चौगुन कहलाती है। इसी प्रकार पंचगुन तथा छहगुन आदि समझनी चाहिये।

गत

बाज के अनुसार मुलायम बोलों की ऐसी रचना को, जिसमें बोलों का विस्तार न किया जा सके, 'गत' कहते हैं। जिस प्रकार दिल्ली–बाज में गतें बजाई जाती हैं। कुछ लोग इन गतों में खाली–भरी का भी प्रयोग

करते हैं। अर्थात् बोल एक बार 'धा' से बजाते हैं तो दूसरी बार उसे 'ता' से बजाकर आवृत्ति पूरी करते हैं, जबकि पूरब–बाज की गतों में अनेक प्रकार की लयें पायी जाती हैं। गतों में प्रायः तिहाइयाँ नहीं होतीं। इनमें स्याही तथा चाँटी, दोनों पर बजने वाले बोलों का प्रयोग होता है। उदाहरण रूप में उस्ताद मोदू खाँ की एक गत दे रहे हैं। यह गत बारह मात्राओं के बोलों से बनी है। इसमें पहले दो बार मात्राएँ ज्यों–की–त्यों बजा दी जाती हैं। फिर उनमें एक बार 'धा' के स्थान पर 'ता' का प्रयोग होता है। अन्त में फिर बारह मात्राएँ ज्यों–की–त्यों बजा दी गई हैं। देखिये –

'धीकृ धीना तिरकिट धीना। ऽतिर किटतक तीना ऽतिर किटतक तातिर किटतक तीना।' इसे ज्यों–की–त्यों दुबारा बजाकर तीसरी बार 'धा' के स्थान पर 'ता' करके, अर्थात् तीकृ तीना तिरकिट तीना। ऽतिर किटतक तीना ऽतिर। किटतक तातिर किटतक तीना' बजाकर, पुनः एक बार पहली 'धा' वाली बारह मात्राएँ बजा डालिये। इस प्रकार यह गत तीन आवृत्तियों में पूरी होगी।

गत–कायदा

जब गत में इस प्रकार के बोल आएँ कि उन बोलों के आधार से उनका उचित विस्तार हो सके, तो इस प्रकार की गतों को 'गत–कायदा' कहते हैं। जैसे –

1.) धिन्ना धाकृ कता धिन्ना। धातृ कता धिना तूना। किन्ना तातृ कता किन्ना। धातृ कता धिना तूना।

2.) तात्र कता धिना धात्र। कधी नक धिना तूना। तात्र कता किना तात्र। कधी नक धिना तूना।

3.) धिना तूना धत्रा कधा। धिना धिना तधा तूना। तिना तूना तात्र कता। धिना धिना तधा तूना।

रेला

रेला और कायदा प्रायः एक प्रकार के ही होते हैं। इन दोनों में एक विशेष अंतर यह होता है कि कायदे दुगुन और चौगुन में ही बजाये जाते हैं, जबकि रेला प्रायः अठगुन और चौगुन में ही बजाया जाता है। रेले में प्रायः एक प्रकार के ही बोल होते हैं और उन्हीं बोलों को बार–बार ठहरते हुए बजाने से रेले की सुन्दरता बढ़ती है; जैसे – धातिर किटतक धातिर किटतक। तुन्ना किड़नग धातिर किटतक। तातिर किटतक तातिर किटतक। तुन्ना किड़नग धातिर किटतक।

कायदा–रेला

कुछ रेले ऐसे होते हैं कि उनका प्रयोग कायदे ओर रेले, दोनों की भाँति किया जा सकता है। उन रेलों को 'कायदा–रेला' कहते हैं; जैसे – धातिर किटधिड़ नगतिर किटतक। तातिर किटधिड़ नगधिर किटतक।

अभ्यासार्थ प्रश्न

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) 'कायदा' से क्या तात्पर्य है ?

(2) 'मुखड़ा' कब बजाया जाता है ?

(3) 'तिहाई' से क्या तात्पर्य है ?

(4) 'परन' किसे कहते हैं ?

(5) 'पेशकार' में क्या पेश करते हैं ?

(6) 'लय' से क्या तात्पर्य है ?

(7) 'लयकारी' मुख्यतः कितने प्रकार की होती है ?
(8) 'गत' किसे कहते हैं ?
(9) 'दुगुन' से क्या तात्पर्य है ?
(10) 'ताल' क्या है ?

लघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) 'कायदा' और 'मुखड़ा' में क्या अन्तर है ?
(2) 'तिहाई' में एक ही बोल को कितनी बार बजाया जाता है ?
(3) 'त्रिताल' में कोई एक 'परण' लिखिये ?
(4) 'एकताल' में कोई एक 'गत' लिखिये ?
(5) 'चौताल' तथा 'एकताल' में क्या समानता है ?

निबंधात्मक प्रश्न

(1) 'पेशकार' को परिभाषित करते हुए अपने पाठ्यक्रम में से किसी एक ताल का पेशकार लिखिये ?
(2) 'लयकारी' को विस्तृत रूप से समझाइये ?
(3) 'एकताल' और 'चौताल' के बोलों में क्या अन्तर है ?

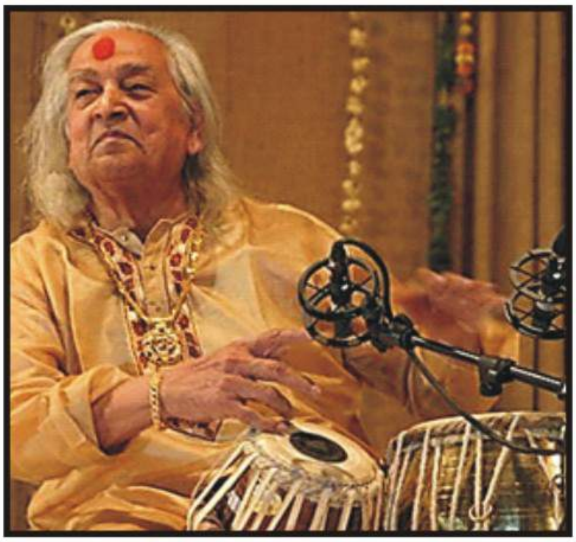

पं. किशन महाराज
तबला वादक